PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Rashtriya Sahara, Delhi
Monday, 2nd November 2020; Page: 11
Width: 37.85 cms; Height: 17.02 cms; a3r; ID: 24.2020-11-02.130

आदिवासियों के जैविक खेती छोड़ने से सरकार भी परेशान

अजय तिवारी

नई दिल्ली (एसएनबी)।

सरकार को इस बात की फिक्र हो रही है कि जनजाति वर्ग में भी परंपरागत जैविक खेती के स्थान पर रसायनिक खाद और कीटनाशक के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार ने पाया है कि अब जनजाति क्षेत्र पहले की तरह दुर्गम नहीं रहे हैं, कारोबारियों की पहुंच वहां आसान हो गई है और उनके ही कहने पर अधिक पैदावार के लालच में जनजाति वर्ग यूरिया और कीटनाशक का उपयोग अपनी खेती में अंधाधुन्ध तरीके से कर रहे है।

यह भी उभर कर आया है कि जनजाति वर्ग को इस विषय में जागरूक करने के लिए जो भूमिका स्वसहायता समूहों को निभानी थी, उनमें से अधिकांश ने नहीं निभाई। सरकार का स्पष्ट मानना है कि जनजाति वर्ग तरक्की तो खूब करे लेकिन वह सदियों से की जाने वाली अपनी जैविक खेती को न छोड़े। जनजातीय कार्य मंत्री अर्जुन मुंडा का कहना है कि भोजन के लिए जैविक खाद्य पदार्थो की आज जबरदस्त मांग है क्योंकि लोग समझ गए है कि रसायनिक खाद और कीटनाशक वाली फसल उनकी सेहत के साथ खिलवाड़ कर सकती है। उन्होंने कहा कि जैविक खाद्य पदार्थो की मांग और इसकी खेती के लाभप्रद होने के विषय में जनजाति वर्ग को समझाने के लिए बड़ा अभियान चलाया जाएगा। इसी क्रम में गो-आधारित प्राकृतिक खेती के लिए जनजातीय किसानों को ट्रेनिंग का कार्यक्रम

- स्वसहायता समूहों ने सही भूमिका नहीं निभाई
- जनजाति कार्य मंत्रालय जैविक खेती के लिए 10 हजार किसानों की गो-आधारित ट्रेनिंग करा रहा है

बनाया गया है।

इसके जरिए जनजाति वर्ग में उन किसानों को फिर से गाय से जोड़ने की कोशिश की जा रही है जो खेती में उसकी उपयोगिता को भुला बैठे है।

इसी क्रम में महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में 10,000 जनजातीय किसानों को गो-आधारित प्राकृतिक खेती की ट्रेनिंग दी जाएगी। कहा यह भी जा रहा है कि किसानों को जैविक प्रमाण दिलाने के साथ-साथ उपज बेचने में भी सरकार मदद करेगी।

जनजाति वर्ग के किसानों को ट्रेनिंग देने का काम आर्ट ऑफ़ लिविंग करेगा। इसके लिए जनजातीय कार्य मंत्रालय ने उसके साथ मिलकर एक उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किया है। जनजातीय कार्य मंत्रालय का मानना है कि जनजाति किसान की खेती में फिर से गाय का महत्व बढ़ने से जैविक खेती को भी बढ़ावा मिलेगा।